कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (5) खण्ड -{9}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1- पहले कौनसा पक्का निश्चय हो-

A मैं आत्मा हूँ

B मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई

C- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं।

D- उपरोक्त सभी।

प्रश्न सं 2- भक्तों के पास भगवान को आना पड़ता है किसलिए-

A- माया की जंजीरों से लिबरेट करने

B- भक्ति का फल देने

C- गाइड बन साथ ले जाने

D- A,B और C

E- A और B

प्रश्न सं 3-वह हद के यज्ञ रचते हैं सेठ लोग। उसमें रूद्र यज्ञ नामीग्रामी है। वह उसमें ..... अक्षर नहीं लगाते हैं।

A- राजस्व

B- अश्वमेध

C- अविनाशी

D- ज्ञान

प्रश्न सं 4- पवित्रता ही सुख और शान्ति का आधार है ।
पवित्र बनो तो तुम्हारे सब .....हो जायेंगे ?

A- दुःख दूर

B- कष्ट खत्म

C- भंडारे भरपूर

D- विकर्म विनाश

प्रश्न सं 5- बाबा ने लॉकेट (बैज) भी बनवाये हैं। एक तरफ त्रिमूर्ति दूसरे तरफ कौन ?

A- शिव बाबा

B- सृष्टि चक्र

C- श्रीकृष्ण

D- ब्रह्मा बाबा

प्रश्न सं 6-आत्मा शरीर को चलाने वाली है, आत्मा में संस्कार रहते हैं, रात को.. .....बन जाती है?

A- अशरीरी

B- देह से न्यारी

C- विदेही

D- देहीभिमानी

प्रश्न सं 7- तुम्हारा यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा, तुम्हारा यादगार पीछे.....में चाहिए ?

A- द्वापर

B- कलियुग

C- संगम

D-परमधाम

प्रश्न सं 8- तुम्हें बेहद के बाप से ..... का शुद्ध लोभ और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है ?

A- अविनाशी खज़ानें

B- स्वर्ग का वर्सा

C- ज्ञान रत्न

D- सर्व शक्तियों की प्राप्ति का

पार्ट (5) खण्ड {9} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-"A" *मैं आत्मा हूं।*

पहले तो अपने को आत्मा समझना है।पहले-पहले *आत्मा* का निश्चय चाहिए कि हम आत्मा अविनाशी हैं। इसके बिगर तो कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठेगा। पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्मा और आत्माओं का बाप वह निराकार परमात्मा है।स्वयं को *आत्मा* निश्चय करने और आत्मिक दृष्टि - वृति का अभ्यास आत्मा को कर्मेन्द्रियजीत बनाता है।मनुष्य में एक तो आत्मा है, दूसरा शरीर है। 5 तत्वों का पुतला बनता है।उसमें आत्मा प्रवेश कर पार्ट बजाती है। दूसरा निश्चय मेरा तो शिवबाबा दूसरा न कोई।इस तरह पहले पहले अपने को *आत्मा निश्चय* करना होता है।

उत्तर सं 2-"D" *A,B और C तीनों सही*

भगवान को आना पड़ता है - माया की जंजीरों से लिबरेट करने। बाबा कहते हैं - मैं आकर दु:खों से लिबरेट करता हूं और गाइड बन साथ ले जाने वाला हूं।तुम पर माया रावण ने 2500 वर्ष राज्य किया है। यह माया बड़ी बलवान है।उनको तो लिबरेट करने में 40-50 वर्ष लगे। मेहनत लगती है। यहाँ भी तुम श्रीमत पर जीत पाते हो। रावण तुम्हारा बड़ा पुराना दुश्मन हैं।तुमको गोली

मारती है माया दुश्मन। गाते हैं कि भक्तों को भक्ति का फल देने के लिए भगवान को आना ही पड़ता है ।भक्तों को भक्ति का फल मुक्ति-जीवनमुक्ति ...ही है।भक्ति में दु:ख बहुत है। बाबा कहते हैं...वह सुप्रीम आकर इनको आप समान सुप्रीम बनाये साथ ले जाते हैं।सब आत्माओं का गाइड है।इस तरह शिव बाबा *गाइड* भी है, *भक्ति का फल* भी देते हैं और *माया की जंजीरों से लिबरेट* भी करते हैं।

उत्तर सं 3-"D" ज्ञान।

रूद्र ज्ञान यज्ञ नाम तो है ना। यज्ञ रचा जाता है ब्राह्मणों से। तुम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ ब्राह्मण ठहरे। वह हद के यज्ञ रचते हैं सेठ लोग। उसमें रूद्र यज्ञ नामीग्रामी है। वह उसमें ज्ञान का अक्षर नहीं लगाते हैं। यह तो है रूद्र ज्ञान यज्ञ। उनको ज्ञान यज्ञ नहीं कहेंगे। भक्ति मार्ग में देखो रूद्र यज्ञ कैसे रचते हैं। ... वह है हद का संन्यास, यह है बेहद का संन्यास।। वैसे ही रूद्र यज्ञ रचते हैं। वास्तव में रूद्र ज्ञान यज्ञ है। इस यज्ञ को बाबा ने यह भी कहा है यह है *रुद्र शिवबाबा का राजस्व अश्वमेध ज्ञान यज्ञ।*

उत्तर सं 4- "C" भण्डारे भरपूर

पवित्रता सुख शान्ति सम्पत्ति सब कुछ था। पवित्रता नहीं है तो न शान्ति है, न सुख।बाप आये ही हैं *पवित्रता-सुख-शान्ति का भण्डारा भरपूर* करने। सतयुग में विश्व महाराजा महारानी बनेंगे। सतयुग है ही पवित्र आत्माओ की दुनिया जहाँ सदा सुख ही सुख है दुःख का तो नाम निशान ही नहीं रहेगा। सब भंडारे बाबा इतने भरपूर कर देंगे की चिंता किस चिड़िया का नाम है पता ही नहीं रहेगा। यहां जो अपने घर को, अपने भंडारे को परमात्मा बाप का भंडारा समझते हैं, वो मानो ब्रह्मा भोजन ही खाते हैं। उनके भंडारे और भंडारी सदा भरपूर रहते हैं।

उत्तर सं 5 "C" श्रीकृष्ण।

चित्र भी बाबा ने बनवाये हैं समझाने लिए। बाबा ने लॉकेट (बैज) भी बनवाये हैं। *एक तरफ त्रिमूर्ति दूसरे तरफ कृष्ण।* यह चित्र तो बहुत अच्छा है। इन पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। गवर्मेन्ट से इनाम मिलता है। बाबा ने तुम्हारे लिए मेहनत कर लॉकेट (बैज) बनाया है। फर्स्ट-क्लास चीज है। लॉकेट दिखा कर बोलो - आओ, हम सारे सृष्टि का राज़ इससे आपको बतावें। हम तुमको त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ विश्व का मालिक बना सकते हैं। इससे हम तुमको विश्व के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं।

उत्तर सं 6-"A" अशरीरी ।

आत्मा शरीर को चलाने वाली है। आत्मा में संस्कार रहते हैं। रात को अशरीरी बन जाती है।आत्मा शरीर को चलाने वाली है. रात को आत्मा शरीर में होती है, लेकिन थककर अशरीरी बन जाती है. शरीर का भान नहीं रहता, तो इसे नींद कहा जाता है. आत्मा अशरीरी आई है, अशरीरी बन जाना है. वहां परमधाम में शरीर संबंध नहीं. आत्माएं वहां से आती हैं, आकर शरीर में प्रवेश करती हैं।इसलिए रात को रेस्ट लेते समय *अशरीरी* बन जाती है।

उत्तर सं 7- "A" द्वापर ।

तुम्हारी यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा।तुम्हारी यादगार. पीछे द्वापर में चाहिए। सतयुग में तुम्हारे यादगार नहीं थे। इस समय द्वापर से तुम अपना यादगार देखते हो।सतयुग में मन्दिर, तीर्थ आदि नहीं मानते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं अमरलोक की याद पीछे *द्वापर* में चाहिए। सतयुग या अमरलोक में धन.. अनगिनत, अथाह, बहुत जमीन, बड़े बड़े बगीचे, सोने के महल, हीरों की जड़त, हरेक का पुष्पक विमान (जो संकल्प से चलता,

कोई एक्सिडेंट नहीं), कोई कमी नहीं... हर स्थान-अवसर के वस्त्र अलग, बिल्कुल हल्के जेवर... रेत में भी सोना होगा।

उत्तर सं 8-"B" स्वर्ग का वर्सा

बाबा कहते हैं -वास्तव में तुम बहुत लोभी हो। परन्तु शुद्ध लोभ है कि बेहद के बाप से हम स्वर्ग का वर्सा लेंगे और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है ।शुद्ध लालच का तात्पर्य असीमित पिता से स्वर्ग की विरासत और आध्यात्मिक प्राप्ति प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है। "यह अच्छी रीति निश्चय हो जाना चाहिए। हम शिवबाबा से अनेक बार स्वर्ग का वर्सा ले चुके हैं, फिर से लेंगे। पुरुषार्थ से तुम जानते हो शिव-बाबा हमको स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं, तो क्यों नहीं उनसे वर्सा लेते हो ?" बाबा 21 जन्मों के लिए *स्वर्ग की राजाई का वर्सा* देते हैं।

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (5) खण्ड -{10}

सम्पूर्ण मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न सं 1-मीठे बच्चे - सर्विस की नई- नई युक्तियाँ निकालते रहो। भारत को ..... बनाने में बाप का पूरा-पूरा मददगार बनो ?

A- परिस्तान

B- दैवी स्वराज्य

C- विश्व का मालिक

D- विश्व गुरू

प्रश्न सं 2- कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे, लेकिन..... रहना है और करना है - यह स्मृति रहे तो कभी गुस्सा नहीं आयेगा ?

A- सन्तुष्ट

B- हर्षित

C- बेफिकर बादशाह

D- निश्चिंत

प्रश्न सं 3-.....को लिफ्ट देने बाप आते हैं क्योंकि..... पर अत्याचार बहुत होते हैं ?

A-बाँधेलियों

B-माताओं

C- सीताओं

D- कन्याओं

प्रश्न सं 4-भारत पर ही कौन सा खेल बना है-

A-राम और रावण का।

B-सुख-दुःख, हार-जीत का

C-स्वर्ग-नर्क का

D-उपरोक्त सभी का

प्रश्न सं 5-ब्राह्मण कौन से दो प्रकार के होते हैं ?

A-सारसिद्ध और पुष्करणी।

B-ब्रह्मा मुखवंशावली

C-मुखवंशावली

D-B और C दोनों

प्रश्न सं 6-सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता से कौन से शास्त्र निकले हैं ?

A-महाभारत,

B-शिवपुराण,

C-वेद, उपनिषद आदि

D-A और B दोनों

E-A,B और C

प्रश्न सं 7- मुस्कुराना किसकी निशानी है ?

A- सन्तुष्टता

B- संपूर्णता

C- पवित्रता

D- खुशी

प्रश्न सं 8- ईव किसको कहा जाये?

A- मम्मा को

B- ब्रह्मा को

C- शिव को

D- आदि देवी

पार्ट (5) खण्ड {10} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

उत्तर सं 1-"B" दैवी स्वराज्य।

मीठे बच्चे सर्विस की नई नई युक्तियां निकालते रहो भारत को *दैवी स्वराज्य* बनाने में बाप का पूरा मदद करो। मन-बुद्धि से मुझ बाप को याद करो, साथ-साथ भारत को दैवी राजस्थान बनाने की सेवा करो "भारत को *दैवी स्वराज* बनाने की सेवा में

अपना सब कुछ सफल करना है। शिवबाबा पर पूरा-पूरा बलिहार जाना है।"

उत्तर सं 2- "A" सन्तुष्ट।

ब्राह्मण अर्थात् सदा सन्तुष्ट रहने और सर्व को सन्तुष्ट करने वाले इसलिए कुछ भी हो जाए, कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन *सन्तुष्ट* रहना है और करना है - यह स्मृति रहे तो कभी गुस्सा नहीं आयेगा। यदि कोई बार-बार गलती करता है तो उसे परिवर्तन करने के लिए गुस्सा नहीं करो, बल्कि रहमदिल बनकर शुभ भावना, शुभ कामना की दृष्टि रखो तो वह सहज परिवर्तन हो जायेंगे।

उत्तर सं 3- "B" माताओं

माताओं को लिफ्ट देने बाप आते हैं क्योंकि माताओं पर अत्याचार बहुत होते हैं।माता गुरू बनी और पिता ने लिफ्ट की गिफ्ट दी।ब्रह्मा बाबा ने *माताओं* पर ज्ञान का कलष रखा। माताओं के मुख से निकला ज्ञान अमृत सबको पावन बनाता है.

माताओं को ही ट्रस्टी बनाया गया है और सब कुछ माताएं ही संभालें ऐसा निर्णय लिया गया।

उत्तर सं 4-"A" राम और रावण का।

भारत पर ही खेल है - *राम और रावण का।* भारत की रावण से हारे हार है फिर रावण पर जीत पहन राम के बनते हैं। राम कहा जाता है शिवबाबा को। राम का भी, तो शिव का भी नाम लेना पड़ता है समझाने के लिए। शिवबाबा बच्चों का मालिक अथवा नाथ है। वह तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं।आधाकल्प राम राज्य है तो आधाकल्प रावण का भी राज्य चलता है। भारत पर ही सारा खेल बना हुआ है।

उत्तर सं 5-"A" सारसिद्ध और पुष्करणी

ब्रह्मा का इतना नाम वा मन्दिर आदि नहीं है। सिर्फ अजमेर में ब्रह्मा का मन्दिर नामीग्रामी है, वहाँ ब्राह्मण भी रहते हैं। ब्राह्मण दो प्रकार के होते हैं - *1-सारसिद्ध और 2- पुष्करणी।* पुष्कर में रहने वालों को पुष्करणी कहा जाता है। परन्तु उन ब्राह्मणों को यह थोड़े ही पता है। कहेंगे हम ब्रह्मा मुखवंशावली हैं।

उत्तर सं 6-"E" A,B और C

बाबा कहते हैं यह गीत भी तुम्हारे शास्त्र हैं। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी गीता है और *सभी शास्त्र महाभारत, रामायण, शिवपुराण, वेद, उपनिषद* आदि इसमें से ही निकले हैं।सभी शास्त्रों में सर्वोच्च स्थान गीता को ही दिया जाता है।

उत्तर सं 7. A सन्तुष्टता।

बापदादा सभी को टाइटल देते हैं – सन्तुष्ट आत्मायें, सन्तुष्ट मणियां। चाहे भाई हैं, चाहे बहन हैं, लेकिन आत्मा मणि है, इसलिए सभी सन्तुष्ट मणियां हैं, और सदा रहेंगी। देखना सन्तुष्टता को छोड़ना नहीं। कितना भी कोई आपके आगे कोशिश करे, आपकी सन्तुष्टता हिलाने के लिए आये लेकिन आप हिलना नहीं, सदा सन्तुष्ट। सदा मुखड़ा मुस्कुराता रहे। कभी कैसा, कभी कैसा नहीं। सदा मुस्कुराता हुआ चेहरा, अगर चेहरे में कभी थोड़ा फर्क आये तो अपने पूजने वाले चित्र को सामने रखो तो मेरा चित्र तो मुस्कुरा रहा है और मैं सोच रही हूँ। तो मुस्कुराना *सन्तुष्टता* की निशानी है। तो क्या बनेंगे? क्या करेंगे? सन्तुष्टमणि। चेहरे पर कभी भी और रेखायें नहीं हों, सिवाए मुस्कुराने के।

*उत्तर सं 8. B *ब्रह्मा को*

ईव किसको कहा जाये? मम्मा को ईव नहीं कहेंगे। मम्मा तो जगदम्बा है। *ईव इनको (ब्रह्मा) ही कहेंगे* क्योंकि इनके मुख द्वारा रचे।मनुष्य समझते हैं - एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह रांग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी जरूर होगी। परन्तु वो लोग ईव जगत अम्बा को कह देते हैं। वास्तव में यह बहुत मुख्य बात है। निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से कहते हैं - तुम हमारे बच्चे हो। यह ब्रह्मा माता बन जाती। ब्रह्मा प्रजापिता भी है तो माता भी है।एडम ही ईव है, यह नहीं समझते।* प्रजापिता ब्रह्मा वही फिर माता हो जाती है। *एडम और ईव अथवा आदम-बीबी कहते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझ सकते हैं। बच्चे समझ सकते हैं आदम-बीबी वास्तव में यह है। बीबी सो आदम है। इनको बीबी-आदम दोनों कह देते हैं।